भारत सरकार

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1245

दिनांक 06 फरवरी, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

ई-सिगरेट के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियामक दृष्टिकोण

†1245**. श्री तंगेला उदय श्रीनिवासः**

क्या **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने ई-सिगरेट तथा हीटेड टोबैको उत्पादों जैसे उत्पादों जिसमें वयस्क केवल पहुँच ढांचे के अंतर्गत इन्हें विनियमित करने वाले देशों की संख्या तथा ऐसे विनियमों का पारंपरिक सिगरेटों से भिन्न स्वरूप शामिल है के संबंध में अंतरराष्ट्रीय नियामक दृष्टिकोणों से संबंधित कोई जानकारी का परीक्षण अथवा संकलन किया है;
(ख) प्रतिबंध से विनियमन की ओर स्थानांतरित हुए देशों का ब्यौरा क्या है तथा ऐसे निर्णयों में किन वैज्ञानिक अध्ययनों, जन-स्वास्थ्य जोखिम आकलनों एवं महामारी विज्ञान संबंधी साक्ष्यों पर विचार किया गया है;
(ग) इन देशों में देखे गए प्रमुख परिणामों का ब्यौरा क्या है, जिसमें वयस्कों एवं युवाओं के उपयोग में परिवर्तन, अवैध व्यापार, प्रवर्तन परिणाम तथा सिगरेट उपयोग की तुलना में जन-स्वास्थ्य संकेतक शामिल हैं;
(घ) क्या सरकार भारत में नीति निर्माण को सूचित करने हेतु वैश्विक अनुभवों का तुलनात्मक एवं साक्ष्य-आधारित आकलन करने का प्रस्ताव रखती है; और
(ङ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ङ): मंत्रालय ने इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट निषेध अधिनियम (पीईसीए), 2019 अधिनियमित किया है, जिसके तहत इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट और इसी तरह की युक्तियों के उत्पादन, विनिर्माण, आयात, निर्यात, परिवहन, बिक्रय, वितरण, भंडारण और विज्ञापन पर रोक लगाई गई है, जो हानिकारक हैं और युवाओं में तंबाकू के सेवन को प्रवर्तित करने की क्षमता रखते हैं।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा इलेक्ट्रॉनिक निकोटीन डिलीवरी सिस्टम (ईएनडीएस) 2019 पर जारी श्वेत पत्र के अनुसार, ईएनडीएस या ई-सिगरेट का उपयोग जीवन-भर मानव शरीर के लगभग सभी तंत्रों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है और गर्भ से लेकर मृत्यु तक जीवन भर इसका प्रभाव बना रहता है। ई-सिगरेट या ई-सिगरेट के कुछ प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं:

- ईएनडीएस या ई-सिगरेट में इस्तेमाल होने वाले काट्रिजों में तरल निकोटीन, फ्लेवरिंग एजेंट और अन्य रसायन भरे होते हैं। एक सामान्य काट्रिज में लगभग 20 सिगरेट के एक पैकेट के बराबर निकोटीन होता है और यह निकोटीन की लत का संभावित स्रोत बन सकता है।
- इसके अलावा, इन उत्पादों में निकोटीन और अन्य रसायनों की मात्रा में काफी भिन्नता होती है, जिसके कारण उपभोक्ता अपने द्वारा उपयोग किए जाने वाले उत्पादों की वास्तविक सामग्री से अनभिज्ञ रहता है।
- ई-सिगरेट में उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले फ्लेवरिंग एजेंट अपने साइटोटॉक्सिक प्रभाव के कारण उपयोगकर्ताओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं, जैसा कि विभिन्न अध्ययनों से सिद्ध हो चुका है।
- ईएनडीएस गर्भवती महिलाओं को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकता है, चाहे वे इसका उपयोग करें या निष्क्रिय एयरोसोल के संपर्क में आएं। यह भ्रूण, शिशु और बच्चे के मस्तिष्क के विकास के लिए भी जोखिम पैदा करता है।
- ई-सिगरेट का उपयोग हृदय प्रणाली को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है, श्वसन प्रणाली, प्रतिरक्षा कोशिका कार्यप्रणाली और सांस-नली को सिगरेट पीने के समान ही बाधित करता है और गंभीर श्वसन रोगों का कारण बनता है।
- ई-सिगरेट के एरोसोल के संपर्क के जरिए विकसित मानव ब्रोन्कियल कोशिकाओं द्वारा तंबाकू के धुएं के संपर्क के जरिए विकसित कोशिकाओं के समान जीन अभिव्यंजक पैटर्न दिखाया है। इस तरह के संपर्क से निकोटीन न पाए जाने पर भी डीएनए क्षति और कोशिका की मृत्यु होती है।
- इन निकोटीन सॉल्वैंट्स पर किए गए अध्ययनों से पता चला है कि बैटरी के आउटपुट वोल्टेज के आधार पर एसिटाल्डिहाइड, फॉर्मेल्डिहाइड और एसीटोन जैसे संभावित कैंसरकारी पदार्थों का उत्सर्जन अलग -अलग मात्रा में होता है। इन तरल-वाष्पीकरण विलयनों में विषैले रसायन और धातुएँ भी होती हैं, जो कैंसर और हृदय, फेफड़े और मस्तिष्क के रोगों सहित कई प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों के लिए जिम्मेदार सिद्ध हुई हैं।

*****